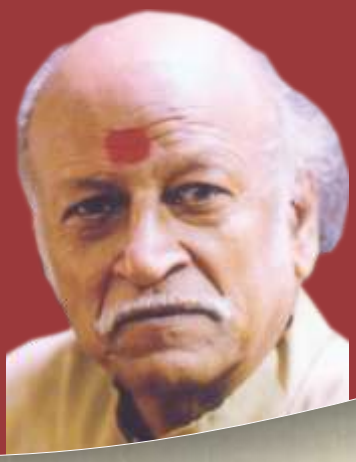

PROF. RAJESHWAR ACHARYA

Prof. Rajeshwar Acharya is a doyen of Hindustani Classical Vocal Music. He is also a renowned academician, Jaltarang player, revered scholar and a prolific orator of the present era.

2. Born on February 15, 1943, in the holy city of Varanasi, Prof. Rajeshwar received his Doctorate in Music from his almamater Banaras Hindu University, while Pt. Balwant Rai Bhatt Bhavrang navigated the path of his practical music training as his Guru and Dada Guru Pt. Omkarnath Thakur Pranavrang illuminated his musical voyage. As a music maestro, Prof. Rajeshwar specialises in Khayal, Drupad, Dhamaar and Bhakti Sangeet. Rather than being only a stage performer all through his life, he preferred to be an academician, so he accepted the post of Music Professor in D.D.U Gorakhpur University and served there as Head of Department of Music & Fine Arts for more than two decades.

3. Some of Prof. Acharya's exceptional feats include establishing a new world record of continuous Jaltarang playing for more than twelve and half hours in 1972 on the stage of Nagari Natak Mandali, Varanasi. Another feather in his cap came when he again established a new world record of continuous singing for thirteen hours under the auspices of Manas Chatushati Samaroh, Varanasi in 1973.

4. Prof. Acharya has been member of various cultural bodies like Manager of Bhava Prabha Padma Sansthan; Ex. Vice-Chairman of Uttar Pradesh Sangeet Natak Academy; Member of Program organizing Committee RIMPA, founded by Pt. Ravi Shankar. At present he is serving as a Trustee Member of Bharat Bhavan, Bhopal. Prof. Acharya has established the Akhil Bharatiya Drupad Melain Kashi, for the purpose of restoring the almost extinct mode of Drupad Sangeet. For the last forty-four long years, he endeavoured to popularize several unconventional instruments, Veena and different kinds of Pakhwaj and also provided platform for nearly a thousand artists for strengthening the school of Dhrupad music. Along with being a master in different modes of music (Drupad, Khayal, Thumri and Bhakti), he is also acknowledged as an expert interpreter, critic and an esteemed scholar of inter-disciplinary subjects. Proficient in both vocal and instrumental, Prof. Acharya, dedicated his life to the service of music without any commercial motive. His disciples have done Ph.Ds on his work in relation to his efforts towards restoring the glory of Dhrupad by organizing Dhrupad Mela. Dr. Acharya has also written scholarly works on Biophysics which have pro used inspirations for further studies. His efforts to give an international form to Dhrupad music has turned his Dhrupad Mela as a cultural pilgrimage for numerous tourists.

5. Prof. Acharya has received various honours and awards including Senior Artist Award by Kashi Raj Dr. Vibhuti Narayan Singh in Dhrupad Mela in 1999; Rotary Vocation Excellence Award in 2013; Best Alumni Award, 2015; Senior Artist Award in UNESCO Supported Sur Ganga Sangit Mahotsav, 2017 etc. He was also honoured by former Prime Minister Late Shri Atal Bihari Vajpayee as Prakhyat Sahityakar in Rashtriya Sahityakar Sammelan, Hapur, 1995.

पद्म श्री

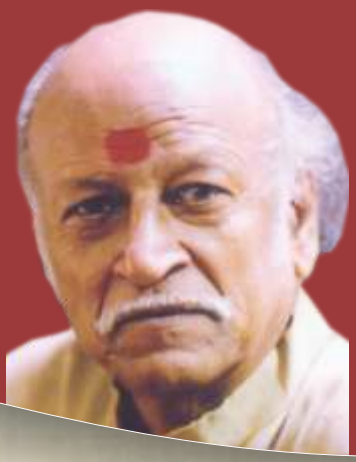

प्रो. राजेश्वर आचार्य

प्रो राजेश्वर आचार्य हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन संगीत के प्रणेता हैं। आप वर्तमान युग के जाने-माने शिक्षाविद्, जलतरंग वादक, उच्च कोटि के विद्वान और प्रखर वक्ता भी हैं।

2. आपका जन्म पवित्र वाराणसी शहर में 15 फरवरी, 1943 को हुआ। आपने अपने शैक्षणिक संस्थान बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से संगीत में डॉक्टरेट की डिग्री ली। पंडित बलवंत राय भट्ट भवरंग ने आपके गुरू के रूप में आपको संगीत का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया और दादा गुरू पंडित ओंकार नाथ ठाकुर प्रणवरंग ने आपको संगीत की बारीकियां समझाईं। संगीत के उस्ताद के रूप में आपने ख्याल, ध्रुपद, धमार और भक्ति संगीत में विशेषज्ञता प्राप्त की है। अपने पूरे जीवन में केवल मंच कलाकार बनकर रहने के बजाय आपने शिक्षाविद् होना पसंद किया। इसलिए आपने डीडीयू गोरखपुर विश्वविद्यालय में संगीत के प्रोफेसर का पद स्वीकार किया और दो दशक से अधिक समय तक संगीत और ललित कला विभाग के अध्यक्ष के रूप में सेवा की।

3. आपकी कुछ असाधारण उपलब्धियों में नगरी नाटक मंडली, वाराणसी के मंच पर वर्ष 1972 में साढ़े बारह घंटे से अधिक समय तक लगातार जलतरंग बजाने का नया विश्व रिकॉर्ड स्थापित करना शामिल है। आपने वर्ष 1973 में मानस चतुष्ठी समारोह वाराणसी के तत्तावधान में 13 घंटे तक लगातार गाने का नया विश्व रिकार्ड स्थापित करके एक और उपलब्धि हासिल की।

4. आप विभिन्न सांस्कृतिक निकायों के सदस्य रहे हैं जैसे भव प्रभा पद्म संस्थान के प्रबंधक; उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के उपाध्यक्ष; पंडित रविशंकर द्वारा स्थापित कार्यक्रम आयोजन समिति आरआईएमपीए के सदस्य। वर्तमान में आप भारत भवन, भोपाल के न्यासी सदस्य के रूप में कार्य रहे हैं। आपने ध्रुपद संगीत की लगभग विलुप्तप्राय विधा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से काशी में अखिल भारतीय द्रुपद मेला की स्थापना की है। पिछले 44 वर्षों से आपने कई अपारंपरिक वाद्य यंत्रों, वीणा और पखावज के विभिन्न प्रकारों को लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया तथा ध्रुपद संगीत की विधा को सुदृढ़ करने के लिए करीब 1000 कलाकारों के लिए मंच भी प्रदान किया। संगीत की विभिन्न विधाओं (ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी और भक्ति) में निपुण होने के साथ-साथ, आप कई विषयों के विशेषज्ञ व्याख्याकार, आलोचक और ख्यातिप्राप्त विद्वान के रूप में भी जाने जाते हैं। आप गायन और वादन दोनों में निपुण हैं। आपने बिना किसी व्यावसायिक उद्देश्य के संगीत की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया है। आपके शिष्यों ने ध्रुपद मेला आयोजित करके ध्रुपद की गरिमा को बहाल करने की दिशा में आपके प्रयासों पर पीएच.डी. की है। आपने जैव भौतिकी पर उच्च कोटि की कृतियों का लेखन भी किया है जिनसे आगे और अध्ययन करने की प्रेरणा मिलती है। ध्रुपद संगीत को अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रदान करने के आपके प्रयासों से आपका ध्रुपद मेला अनेक पर्यटकों के लिए सांस्कृतिक तीर्थ स्थल बन गया है।

5. आपको कई सम्मानों और पुरस्कारों से नवाज़ा गया है जिनमें वर्ष 1999 में ध्रुपद मेला में काशीराज डॉ. विभूति नारायण सिंह द्वारा वरिष्ठ कलाकार पुरस्कार; वर्ष 2013 में रोटरी वोकेशन एक्सेलेंस अवार्ड; बेस्ट एल्युमिनी अवार्ड, 2015; युनेस्को समर्थित सुर गंगा संगीत महोत्सव, 2017 में वरिष्ठ कलाकार पुरस्कार आदि शामिल हैं। आपको पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन, हापुड़, 1995 में प्रख्यात साहित्यकार के रूप में भी सम्मानित किया गया।